ॐ

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीकासमण्णिदो

तत्थ

संतकम्मगब्भिएसु सेस-अट्ठारह-अणुयोगद्दारेसु

७ णिबंधणाणुयोगद्दारं

****

णिट्ठवियअट्ठकम्मं केवलणाणेण दिट्ठपरमट्ठं ।
णमियूणरिट्ठणेमिं वोच्छामि णिबंधणणुयोगं ।।

जिन्होंने आठ कर्मोंका अंत करके प्रकट हुए केवलज्ञानके द्वारा पदार्थके यथार्थ स्वरूपको देख लिया है । ऐसे अरिष्टनेमि जिनेंद्र (बाईसवें तीर्थंकर) को नमस्कार करके निबंधन अनुयोगद्वारका कथन करते हैं ।

भूदबलिभडारएण जेणेदं सुत्तं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सुत्तेण सूचिदसेसअट्ठारसअणुयोगद्दाराणं किंचि संखेवेण परूवणं करिस्सामो। तं जहा -- निबध्यते तदस्मिन्निति निबन्धनं जं दव्वं जम्हि णिबद्धं तं णिबंधणं त्ति भणिदं होदि। णिबंधणे त्ति अणुयोगद्दारे णिबंधणं ताव अपयदणिबंधणणिराकरणट्ठं णिक्खिवियव्वं तं जहा -- णामणिबंधणं

ठवणणिबंधणं दव्वणिबंधणं खेत्तणिबंधणं कालणिबंधणं भावणिबंधणं चेदि छव्विहं णिबंधणं होदि। जस्स णामस्स वाचगभावेण पवुत्तीए जो अत्थो आलंबणं होदि सो णामणिबंधणं णाम, तेण विणा णामपवुत्तीए अभावादो। तं च णामणिबंधणमत्थाहिहाण-पच्चयभेएण तिविहं। तत्थ अत्थो अट्ठविहो एग-बहुजीवाजीवजणिदपादेक्क-संजोगभंगभेएण। एदेसु अट्ठसु अत्थेसुप्पण्णणाणं (१काप्रतौ 'अत्थेसुप्पण्णण्णाणं इति पाठः।) पंचयणिबंधणं। जो णामसद्दो पवुत्तो (म प्रतिपाठोऽयम्। का प्रतौ 'सद्दो ण वुत्तो ता प्रतौ 'सद्दो (ण) वुत्तो इति पाठः।) संतो अप्पाणं चेव जाणावेदि तमभिहाणणिबंधणं णाम। अधवा, एदं सव्वं पि दव्वादिणिबंधणेसु पविसदि त्ति मोत्तूण णिबंधणसद्दो चेव णामणिबंधणं ति घेत्तव्वं, एदं संते पुणरुत्तदोसाभावादो।

भूतबलि भट्टारक ने चूँकि यह सूत्र देशामर्शक रूपसे लिखा है, अत एव इस सूत्रके द्वारा सूचित शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी कुछ संक्षेपसे प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- 'निबध्यते तदस्मिन्निति निबन्धनम्' इस निरुक्तिके अनुसार जो द्रव्य जिसमें संबद्ध है उसे निबंधन कहा जाता है। निबंधन इस अनुयोगद्वारमें पहले अपकृत निबंधनके निराकरणार्थ निबंध का निक्षेप करते हैं। वह इस प्रकार है -- नामनिबंधन, स्थापनानिबंधन, द्रव्यनिबंधन, क्षेत्रनिबंधन, कालनिबंधन और भावनिबंधन। इस प्रकार निबंधन छह प्रकारका है। जिस नामकी वाचक रूपसे प्रवृत्तिमें जो अर्थ आलंबन होता है वह नामनिबंधन है, क्योंकि, उसके बिना नामकी प्रवृत्ति संभव नहीं है। वह नामनिबंधन अर्थ, अभिधान और प्रत्ययके भेदसे तीन प्रकारका है, उनमें एक व बहुत जीव तथा अजीवसे उत्पन्न प्रत्येक व संयोगी भंगोंके भेदसे अर्थ आठ प्रकारका है, इन आठ अर्थोंमें उत्पन्न हुआ ज्ञान प्रत्ययनिबंधन कहलाता है। जो संज्ञा शब्द प्रवृत्त होकर अपने आपको जतलाता है वह अभिधाननिबंधन कहा जाता है। अथवा, यह भी चूँकि द्रव्यनिबंधन आदिक निबंधनोंमें प्रविष्ट है, अत एव उसे छोड़कर 'निबंधन' शब्दको ही नाम रूपसे ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, ऐसा होनेपर पुनरुक्त दोष नहीं आता।

ठवणणिबंधण दुविहं सब्भावासब्भावट्ठवणणिबंधणभेएण। तं जहा (म प्रतिपाठोऽयम्। का-ताप्रत्योः 'तं जहा' इति पाठः) अणुयरइ अप्पिददव्वं तं जहा ठविदं सब्भावट्ठवणणिबंधणं।

तव्विवरीयमसब्भावट्ठवणणिबंधणं। जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूण परिणमदि जस्स वा दव्वस्स (प्रत्योरुभयोरेव 'सद्दस्स' इति पाठः) सहावो दव्वंतरपडिबद्धो तं दव्वणिबंधणं। खेत्तणिबंधणं णाम गाम-णयरादीणि (ता प्रतौ 'गामणयरादीहि' इति पाठः) पडिणियत्तखेत्ते तेसिं पडिबंधत्तुवलंभादो। जो जम्हि काले पडिबद्धो अत्थो तक्कालणिबंधणं। तं जहा चूअ (प्रत्योरुभयोरेव 'भूअ' इति पाठः।) फुल्लाणि चेत्तमासणिबद्धाणि, अंबिलियाहुल्लाणि आसाढमासणिबद्धाणि, वियइल्लहुल्लाणि वइसाह-जेट्ठमासणिबद्धाणि; तत्थेव तेसिमुवलंभादो। एवमण्णेसिं पि कालणिबंधणं जाणिऊण वत्तव्वं। पंचरत्तियाओ णिबंधो त्ति वा। जं दव्वं भावस्स आलंबणमाहारो होदि तं भावणिबंधणं। जहा लोहस्स हिरण्ण-सुवण्णादीणि णिबंधणं ताणि अस्सिऊण तदुप्पत्तिदंसणादो (ता प्रतौ 'तदुववत्तिदंसणादो' इति पाठः) उप्पण्णस्स वि लोहस्स तदावलंबणदंसणादो। कोहुप्पत्तिणिमित्तदव्वं कोहणिबंधणं उप्पण्णकोहावलंबणदव्वं वा।

स्थापनानिबंधन सद्‌भावस्थापनानिबंधन और असद्‌भावस्थापनानिबंधन भेदसे दो प्रकारका है। जो जिस प्रकारसे विवक्षित द्रव्य का अनुसरण करता है उसीको उसी प्रकारसे स्थापित करना सद्‌भावस्थापनानिबंधन है। उससे विपरीत असद्‌भावस्थापनानिबंधन है। जो द्रव्य जिन द्रव्योंका आश्रय करके परिणमन करता है अथवा जिस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यांतरसे प्रतिबद्ध है वह द्रव्यनिबंधन कहलाता है। ग्राम व नगर आदि क्षेत्रनिबंधन हैं, क्योंकि प्रतिनियत क्षेत्रमें उनका संबंध पाया जाता है। जो अर्थ जिस कालमें प्रतिबद्ध है वह कालनिबंधन कहा जाता है। यथा -- आम्र वृक्ष के फूल चैत्र मास से संबद्ध हैं, अम्लिकाके फूल आषाढ माससे संबद्ध हैं, विचकिल नामक वृक्षविशेषके फूल वैशाख व ज्येष्ठ माससे संबद्ध हैं, क्योंकि वे इन्हीं मासोंमें पाये जाते हैं। इसी प्रकार दूसरों के भी कालनिबंधनका जानकर कथन करना चाहिए। अथवा पंचरात्रिक निबंधन कालनिबंधन है।(?) जो द्रव्य भावका आलंबन अर्थात् आधार होता है वह भावनिबंधन है। जैसे -- लोभके चाँदी-सोना आदिक निबंधन हैं, क्योंकि उनका आश्रय करके लोभ की उत्पत्ति देखी जाती है, तथा उत्पन्न हुआ लोभ भी उनका आलंबन देखा जाता है। क्रोधकी उत्पत्तिका निमित्तभूत द्रव्य अथवा उत्पन्न हुआ क्रोध जिसका आलंबन होता है वह क्रोधनिबंधन कहा जाता है।

एत्थ एदेसु णिबंधणेसु केण णिबंधणेण पयदं? णाम ट्ठवणणिबंधणाणि मोत्तूण सेससव्वणिबंधणेसु पयदं। एदं णिबंधणाणुओगद्दारं जदि वि छण्णं दव्वाणं णिबंधणं परूवेदि तो वि तमेत्थ मोत्तूण कम्मणिबंधणं चेव घेत्तव्वं, अज्झप्पविज्जाए अहियारादो।

शंका -- यहाँ इन निबंधनोंमें कौनसा निबंधन प्रकृत है?

समाधान -- नामनिबंधन और स्थापनानिबंधनको छोड़कर शेष सब निबंधन यहाँ प्रकृत हैं। यह निबंधानुयोगद्वार यद्यपि छह द्रव्योंके निबंधन की प्ररूपणा करता है तो भी यहाँ उसे छोड़कर कर्मनिबंधनको ही ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि यहाँ अध्यात्मविद्याका अधिकार है।

किमट्ठं णिबंधाणुओगद्दारमागयं? दव्व-खेत्त-काल-भावेहि कम्माणि परूविदाणि, मिच्छत्तासंजंम-कसाय-जोगपच्चया वि तेसिं परूविदा, तेसिं कम्माणं पाओग्गपोग्गलाणं पि परूवणा कदा। संपहि तेसिं कम्माणं लद्धप्पसरूवाणं वावारपदुप्पायणट्ठं णिबंधणाणुयोगद्दारमागयं।

शंका -- निबंधनानुयोगद्वार किसलिए आया है?

समाधान -- द्रव्य, क्षेत्र, काल और योगरूप प्रत्ययोंकी प्ररूपणा की जा चुकी है; उनके मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगरूप प्रत्ययोंकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है, तथा उन कर्मोंके योग्य पुद्गलोंकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है। अब आत्मलाभको प्राप्त हुए उन कर्मोंके व्यापार का कथन करनेके लिए निबंधनानुयोगद्वार आया है।

तत्थ जं तं णोआगमदो कम्मदव्वणिबंधणं तं दुविहं -- मूलकम्मणिबंधणं उत्तरकम्मणिबंधणं चेदि। तत्थ अट्ठ मूलकम्माणि, तेसिं णिबंधणं वत्तइस्सामो। तं जहा इ

उनमें जो नोआगमद्रव्यनिबंधन है वह दो प्रकारका है -- मूलकर्मनिबंधन और उत्तरकर्मनिबंधन। उनमें मूल कर्म आठ हैं, उनके निबंधनका कथन करते हैं। यथा -

----

तत्थ णाणावरणं सव्वदव्वेसु णिबद्धं * णोसव्वपज्जाएसु ।।१।।

----

* (काप्रतौ 'णिबंधणं', ताप्रतौ 'णिबंधण (णिबद्धं)' इति पाठः।)

उनमें ज्ञानावरण सब द्रव्योमें निबद्ध है और नो सर्व पर्यायोंमें असर्व पर्यायोंमें (कुछ पर्यायों में) वह निबद्ध है।

सव्वदव्वेसु णिबद्धं ति केवलणाणावरणमस्सिदूण भणिदं। कुदो? तिकालविसयअणंतपज्जाय-भरिदछदव्वविसयकेवलणाणविरोहित्तादो। णोसव्वपज्जाएसु त्ति वयणं सेसणाणावरणाणि पडुच्च भणिदं, सेसणाणाणं सव्वदव्वग्गहणसत्तीए अभावादो।

'सब द्रव्योंमें निबद्ध है' यह केवलज्ञानावरणका आश्रय करके कहा गया है, क्योंकि वह तीनों कालोंको विषय करनेवाली अनंत पर्यायोंसे परिपूर्ण ऐसे छह द्रव्योंको विषय करनेवाले केवलज्ञानका विरोध करनेवाली प्रकृति है। असर्व (कुछ) पर्यायोंमें निबद्ध है यह वचन शेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी अपेक्षासे कहा गया है, क्योंकि शेष ज्ञानोंमें सब द्रव्योंको ग्रहण करनेकी शक्ति नहीं पायी जाती।

मदिसुदणाणाणं सव्वदव्वविसयत्तं किण्ण वुच्चदे, तासिं मुत्तामुत्तसेसदव्वेसु वावारुवलंभादो। ण एस दोसो, तेसिं दव्वाणमणंतेसु पज्जाएसु तिकालविसएसु तेहि सामण्णेणावगएसु विसेसरूवेण वावाराभावादो। भावो वा केवलणाणेण समाणत्तं तेसिं पावेज्ज। ण च एवं, पंचणाणुवदेसस्स अभावप्पसंगादो। णोसद्दो सव्वपडिसेहओ (का प्रतौ 'सद्दपडिसेहओ', ता प्रतौ 'सद्द

(व्व) पडिसेहओ' इति पाठः।)त्ति किण्ण घेप्पदे? ण, णाणावरणस्साभावस्स पसंगादो, सुववयणविरोहादो च। तम्हा णोसद्दो देसपडिसेहओ त्ति घेत्तव्वं।

शंका -- नो शब्दको सबसे प्रतिषेधक रूपसे क्यों नहीं ग्रहण किया जाता है?

समाधान -- नहीं, वैसा स्वीकार करनेपर एक तो ज्ञानावरणके अभाव का प्रसंग आता है, दूसरे स्ववचनका विरोध भी होता है। इसलिए 'नो' शब्दको देशप्रतिषेधक ही ग्रहण करना चाहिए।

एवं दंसणावरणीयं।।२।।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय भी सब द्रव्योंमें निबद्ध है और नोसर्वपर्यायों में अर्थात् असर्व पर्यायोंमें (कुछ पर्यायों में) वह निबद्ध है।

दंसणावरणीयं णाम अप्पाणम्मि चेव णिबद्धं, अण्णहा णाण-दंसणाणमेयत्तप्पसंगादो। ण च विसयविसयिसण्णिवादाणंतरसमए सामण्णग्गहणं दंसणं, विषय-विषयिसन्निपातानन्तर-माद्यग्रहणमवग्रह इति लक्षणात् ज्ञानत्वं प्राप्तस्यावग्रहस्य दर्शनत्वविरोधात्। किं च ण विसेसेण विणा सामण्णं चेव घेप्पदि, दव्व-खेत्त-काल-भावेहि अविसेसिदस्स गहणत्ताणुववत्तीदो। किं च -- णाणेण किमवत्थुपरिच्छेदो (का प्रतौ 'परिच्छदि' इति पाठः।) आहो वत्थुपरिच्छेदो कीरदि? ण पढमपक्खो, घड-पडादिवत्थूणं परिच्छेदयाभावेण सयललोगसंववहाराभावप्पसंगादो। ण बिदियपक्खो वि, दंसणस्स णिव्विसयत्तप्पसंगादो। एवं दंसणं पि ण वुत्तदोसे अइक्कमइ। ण च णाणदंसणेहि अक्कमेण वत्थुपरिच्छेदो कीरदि, दोण्णमक्कमेण पवुत्तिविरोहादो। एदं कुदो णव्वदे? "हंदि दुव्वे णत्थि उवजोगा" (दंसण-णाणावरणक्खए समाणम्मि कस्स पुव्वअरं। होज्ज समिं उप्पाओ हंदि दुए णत्थि उवओगा।। सम्मइ. २-९) इदि वयणादो।

शंका -- दर्शनावरणीय कर्म आत्मामें ही निबद्ध है, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर ज्ञान और दर्शनके एक होनेका प्रसंग आता है। यदि कहा जाय कि विषय और विषयीके संनिपातके अनंतर समय में जो सामान्य ग्रहण होता है वह दर्शन है तो यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, विषय और विषयीके सन्निपातके अनन्तर जो आद्य ग्रहण होता है वह अवग्रह कहा जाता है, इस प्रकारके लक्षणसे ज्ञानस्वरूपको प्राप्त हुए अवग्रहके दर्शन होनेका विरोध आता है। दूसरे, विशेषके विना केवल सामान्यका ग्रहण करना शक्य भी नहीं है, क्योंकि, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी विशेषतासे रहित केवल सामान्यका ग्रहण नहीं बन सकता। तीसरे, ज्ञान क्या अवस्तुको ग्रहण करता है अथवा वस्तुको? प्रथम पक्ष तो संभव नहीं है, क्योंकि ज्ञानके घट-पट आदि वस्तुओंका परिच्छेदक न रहनेसे समस्त लोकव्यवहारके अभाव हो जानेका प्रसंग आता है। द्वितीय पक्ष भी नहीं बनता है, क्योंकि, ऐसा स्वीकार करनेपर दर्शनके निर्विषय हो जानेका प्रसंग आता है। इसी प्रकार दर्शनमें भी उक्त दोनों दोषोंका प्रसंग आता है। ज्ञान व दर्शन युगपत् वस्तु का परिच्छेदन करते हैं, यह भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, दोनोंकी युगपत् प्रवृत्ति होनेमें विरोध आता है

प्रतिशंका -- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

प्रतिशंका समाधान -- यह खेद है कि दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते है इस आगमवचन से जाना जाता है।

ण च कमेण वत्थुपरिच्छित्तिं कुणंति, केवलणाण-दंसणाणं पि कमपवुत्तिपसंगादो। दोण्णमेक्कदरस्स अभावो वि होज्ज, अगहिदगहणाभावादो। तम्हा एवं दंसणावरणस्से ति वयणं ण घडदे।

यदि कहा जाय कि वे क्रमसे वस्तुका परिच्छेदन करते हैं तो यह भी संभव नहीं है, क्योंकि ऐसा मानने पर केवलज्ञान और केवलदर्शन दोनोंके भी क्रमप्रवृत्ति का प्रसंग आता है। तथा दोनोंमेंसे किसी एकका अभाव भी हो जाना चाहिए, क्योंकि, वैसा होने पर दूसरेके

अगृहीतग्रहण संभव नहीं है। इस कारण ज्ञानावरण के समान दर्शनावरण भी है ऐसा जो वचन कहा गया है, वह घटित नहीं होता है?

ण, एस दोसो, सरूवस्स बज्झत्थपडिबद्धस्स संवेयणं (का प्रतौ 'बज्झत्थाणावलंबणादो' इति पाठः।) दंसणं णाम। ण च बज्झत्थेण असंबद्धं सरूवमत्थि, णाण-सुह-दुक्खाणं सव्वेसिं पि बज्झ त्थावठंभबलेणेव तेसिं पवुत्तिदंसणादो। तदो एवं दंसणावरणीयस्से त्ति वयणं घडदि त्ति सिद्धं। सेसं जाणिऊण वत्तव्वं।

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बाह्य अर्थसे संबद्ध आत्मस्वरूपके जाननेका नाम दर्शन है। यदि कहा जाय कि आत्मस्वरूप बाह्य अर्थसे संबद्ध नहीं रखता, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ज्ञान, सुख व दुःखरूप उन सभीकी प्रवृत्ति बाह्य अर्थके आलंबनसे ही देखी जाती है। अत एव ज्ञानावरणके समान दर्शनावरण भी है यह वचन संगत ही है, यह सिद्ध है। शेष कथन जानकर करना चाहिए।

वेयणीयं सुह-दुक्खम्मि णिबद्धं ।।३।।

वेदनीय सुख-दुःखमें निबद्ध है।

सिरोवेयणादी दुक्खं णाम। तस्स उवसमो तदणुप्पत्ती वा दुक्खुवसमहेउदव्वादिसंपत्ती वा सुहं णाम। तत्थ वेयणीयं णिबद्धं, तदुप्पत्तीकारणत्तादो।

सिरकी वेदना आदिका नाम दुःख है। उक्त वेदनाका उपशांत हो जाना अथवा उसका उत्पन्न ही न होना अथवा दुःखोपशांतिके कारणभूत द्रव्यादिककी प्राप्ति होना इसे सुख कहा जाता है। उनमें वेदनीय कर्म निबद्ध है, क्योंकि वह उनकी उत्पत्ति का कारण है।

मोहणीयमप्पाणम्मि णिबद्धं ।।४।।

मोहनीय कर्म आत्मामें निबद्ध है।

कुदो? सम्मत्त-चारित्ताणं जीवगुणाणं घायणसहावादो। सम्मत्त-चारित्ताणि णाणदंसणाणीव बज्झत्थसंबद्धाणीव बज्झत्थसंबद्धाणि चेव, तदो मोहणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धमिदि किण्ण वुच्चदे? ण एस दोसो, चत्तारि वि घाइकम्माणि जीवम्हि चेव णिबद्धाणि त्ति जाणावणट्ठं

बज्झत्थाणवलंबणादो (का प्रतौ 'पडिबद्धस्स तंवेयणं' इति पाठः।)।

कारण कि उसका स्वभाव सम्यक्त्व व चारित्ररूप जीवगुणोंके घातने का है।

शंका -- ज्ञान व दर्शन के समान सम्यक्त्व एवं चारित्र भी चूँकि बाह्य अर्थसे ही संबंध रखते हैं, अत एव मोहनीय कर्म सब द्रव्योंमें निबद्ध है; ऐसा क्यों नहीं कहते?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि चारों ही घातिया कर्म जीव द्रव्यमें ही निबद्ध है, यह जतलानेके लिए यहाँ बाह्य अर्थका अवलंबन नहीं लिया है।

आउअं भवम्मि णिबद्धं ।।५।।

आयु कर्म भवके विषय में निबद्ध है।

कुदो? भवधारणलक्खणत्तादो। को भवो णाम? उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमसमओ त्ति जो अवत्थाविसेसो सो भवो णाम।

शंका -- भव किसे कहते है?

समाधान -- उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अंतिम समय तक जो विशेष अवस्था रहती है, उसे भव कहते हैं।

णामं तिधा णिबद्धं, पोग्गलविवागणिबद्धं, जीवविवागणिबद्धं खेत्तविवागणिबद्धं ।।६।।

नाम कर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है -- पुद्‌गलविपाकनिबद्ध, जीवविपाकनिबद्ध और क्षेत्रविपाकनिबद्ध।

वण्ण-गंध-रस-फास-संघादणादीणं विवागो पोग्गलणिबद्धो, तेसिमुदएण वण्णादीणमुप्पत्तिदंसणादो। तित्थयरादीणि कम्माणि जीवणिबद्धाणि, तेसिं विवागस्स जीवे चेवुवलंभादो। आणुपुव्वी खेत्तणिबद्धा, पडिणियदखेत्ते चेव तिस्से विवागुवलंभादो। तेण णामं तिधा णिबद्धं ति सिद्धं।

वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संघात आदि नामकर्मप्रकृतियोंका विपाक पुद्‌गलमें निबद्ध है, क्योंकि, उनके उदय से वर्णादिककी उत्पत्ति देखी जाती है। तीर्थंकर आदिक कर्म जीवमें निबद्ध हैं, क्योंकि उनका विपाक जीवमें ही पाया जाता है। आनुपूर्वी कर्म क्षेत्रमें निबद्ध है, क्योंकि उसका विपाक प्रतिनियत क्षेत्रमें ही पाया जाता है। इस कारण नाम कर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है यह सिद्ध होता है।

गोदमप्पाणम्हि णिबद्धं ।।७।।

गोत्र कर्म आत्मामें निबद्ध है।

कुदो? उच्च-णीचगोदाणं जीवपज्जायत्तणेण दंसणादो।

कारण कि उच्च व नीच गोत्र जीवकी पर्यायस्वरूपसे देखे जाते हैं।

अंतराइयं दाणादिणिबद्धं ।।८।।

अंतराय कर्म दानादिकमें निबद्ध है।

कुदो? दाणादीणं विग्घकरणे तव्वावारुवलंभादो।

कारण कि दानादिकोंके विषय में विघ्न करनेमें उसका व्यापार पाया जाता है।

एवं मूलपयडिणिबंधणपरूवणं समत्तं ।

इस प्रकार मूलप्रकृति निबंधनप्ररूपणा समाप्त हुई।

संपहि उत्तरपयडिणिबंधणं वुच्चदे। तं जहा --

अब उत्तर प्रकृतियोंके निबंधन की प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है --

चत्तारि णाणावरणीयाणि दव्वपज्जायाणं देसणिबद्धाणि ।।९।।

चार ज्ञानावरणीय प्रकृतियाँ द्रव्योंकी पर्यायोंके एकदेश में निबद्ध हैं। ।।९।।

ओहिणाणं दव्वदो मुत्तिदव्वाणि चेव जाणदि णामुत्तधम्माधम्म-कालागास-सिद्धजीवदव्वाणि, 'रूपिष्ववधेः' (त. सू. १-२७. २ का प्रतौ 'वरणीयं पदेसाणिबद्धं' इथइ फआठः।) इति वचनात्। खेत्तदो घणलोगब्भंतरट्ठिदाणि (प्रत्योरुभयोरेव 'ट्ठिदाणं' इति पाठः।) चेव जाणदि, णो बहित्थाणि (प्रत्योरुभयोरेव 'बहिद्धाणि' इति पाठः।)। कालदो असंखेज्जेसु वासेसु जमदीदमणागयं तं चेव जाणदि, णो बहित्थं (प्रत्योरुभयोरेव 'बहिद्ध' इति पाठः) । भावदो असंखेज्जलोगमेत्तदव्वपज्जाए तीदाणागद-वट्टमाण-कालविसए जाणदि। तेणोहिणाणं सव्वदव्वपज्जयविसयं ण होदि। तदो ओहिणाणावरणं सव्वदव्वाणं देसणिबद्धं ति भणिदं। मणपज्जवणाणं पि जेण दव्व-खेत्त-काल-भावाणं विसईकदेगदेसं तेण मणपज्जवणाणावरणीयं पि देसणिबद्धं। एवं मदि-सुद-णाणावरणीयं पि (का प्रतौ 'प देसणिबद्धं', ता प्रतौ 'पि देसणिबद्धं' इति पाठः।) देसणिबद्धत्तं परूवेयव्वं।

अवधिज्ञान द्रव्यकी अपेक्षा मूर्त द्रव्योंको ही जानता है। धर्म, अधर्म, आकाश और सिद्ध जीव इन अमूर्त द्रव्योंको वह नहीं जानता; क्योंकि, अवधिज्ञानका निबंध रूपी द्रव्योंमें है ऐसा सूत्रवचन है। क्षेत्रकी अपेक्षा वह घनलोकके भीतर स्थित द्रव्योंको ही जानता है, उसके बाहर स्थित द्रव्योंको नहीं जानता। कालकी अपेक्षा वह असंख्यात वर्षोंके भीतर जो अतीत व अनागत वस्तु है उसे ही जानता है, उनके बाहर स्थित वस्तुको नहीं जानता। भावकी अपेक्षा वह अतीत, अनागत एवं वर्तमान कालको विषय करनेवाली असंख्यात लोकमात्र द्रव्य-पर्यायोंको जानता है। इसलिए अवधिज्ञान द्रव्योंकी समस्त पर्यायोंको विषय करनेवाला नहीं है। इसी कारण अवधिइ ाानावरण सब द्रव्योंके एकदेश में निबद्ध है, ऐसा कहा है। मनःपर्ययज्ञान भी चूँकि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा एकदेशको ही विषय करनेवाला है, अतएव मनःपर्यय ज्ञान भी

देशनिबद्ध है। इसी प्रकार मतिज्ञानावरणीय और श्रुतज्ञानावरणीय की भी देशनिबद्धताका कथन करना चाहिए।

केवलणाणावरणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं ।।१०।।

केवलज्ञानावरण सब द्रव्योंमें निबद्ध है।

कुदो? विसईकदासेसदव्व (प्रत्योरुभयोरेव 'विसमईकदासेसदव्वं' इति पाठः।) केवलणाणपडिबंधयत्तादो। खेत्त-काल-भावग्गहणं (का प्रतौ 'कालभवग्गहणं', ता प्रतौ 'कालणिबद्धग्गहणं इति पाठः) सुत्ते ण कदं, तेण तमेत्थ वत्तव्वं? ण दव्वेहिंतो पुधभूदक्खेत्त-काल-भावाणमभावादो।

कारण कि वह समस्त द्रव्योंको विषय करनेवाले केवलज्ञान का प्रतिबंधक है।

शंका -- यहाँ सूत्रमें क्षेत्र, काल और भावका ग्रहण नहीं किया गया है, इसलिए उनका यहाँ कथन करना चाहिए।

समाधान -- नहीं, क्योंकि द्रव्योंसे पृथग्भूत क्षेत्र, काल और भावका अभाव है।

थीणगिद्धितियं णिद्दा पयला य अचक्खुदंसणावरणीयं अप्पाणम्मि णिबद्धं ।।११।।

स्त्यानगृद्धित्रय, निद्रा, प्रचला और अचक्षुदर्शनावरणीय आत्मा में निबद्ध हैं।।११।।

जीवस्स सगसंवेयणघाइत्तादो। रस-फास-गंध-सद्द-दिट्ठ-सुवाणुभूदत्थ-विसयसगसगत्तिविसय-जीवोवजोगो अचक्खुदंसणं णाम। तम्हा (का प्रतौ 'तं जहा' इति पाठः।) अचक्खुदंसणेण बज्झत्थणिबंधणेण (का प्रतौ 'विबंधणेण' इति पाठः।) होदव्वमिदि? सच्चमेदं, किंतु तमेत्थ बज्झत्थणिबंधणत्थं ण विवक्खिदं। किमट्ठं विवक्खा ण कीरदे? सव्वं पि दंसणं णाणं

बज्झत्थविसयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं ण कीरदे।

कारण कि उक्त प्रकृतियाँ जीवके स्वसंवेदनको घातनेवाली हैं।

शंका -- रस, स्पर्श, गंध, शब्द, दृष्ट, श्रुत व अनुभूत अर्थको विषय करनेवाली अपनी शक्तिविषयक जीवके उपयोगको अचक्षुदर्शन कहा जाता है। इसीलिए अचक्षुदर्शन का निबंधन बाह्य अर्थ होना चाहिए?

समाधान -- यह कहना सत्य है, किंतु बाह्यार्थ निबंधनताकी यहाँ विवक्षा नहीं की गयी है।

शंका -- उसकी विवक्षा क्यों नहीं की गयी है?

समाधान -- सभी दर्शन ज्ञानके समान बाह्य अर्थको विषय करनेवाला नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ यहाँ उसकी विवक्षा नहीं की गयी है।

चक्खुदंसणावरणीयं (ता प्रतौ 'चक्खुदंसणीयं' इति पाठः।) गरुअलहुअणंतपदेसिएसु दव्वेसु णिबद्धं।।१२।।

चक्षुदर्शनावरणीय कर्म गुरु व लघु ऐसे अनंत प्रदेशवाले द्रव्योंमें निबद्ध है।

संखेज्जासंखेज्जपदेसियपोग्गलदव्वं चक्खुदंसणस्स विसओ ण होदि, किंतु अणंतपदेसियपोग्गलदव्वं चेव विसओ होदि त्ति जाणावणट्ठमणंतपदेसिएसु दव्वेसु त्ति भणिदं। एदं वयणं देसामासियं, तेण सव्वेसिं दंसणणाणमचक्खुसण्णिदाणमेसा परूवणा कायव्वा। गरुअलहुअविसेसणं अणंतपदेसियखधस्स होदि, गरुआणं लोहदंडादीणं हलुआण(का प्रतौ 'हलुहाणं', ता प्रतौ 'हलुहाण (लहुआण)' इति पाठः।) मक्कतूलादीणं (म प्रतिपाठोऽयम्। का प्रतौ 'मक्कचूलादीणं', ता प्रतौ 'मक्कतुलादीणं' इति पाठः।) च चक्खिंदिएण (का प्रतौ 'चक्खिंदिएया',ता प्रतौ 'चक्खिंदिएय (ण)')इति पाठः।) गहणुवलंभादो।

संख्यात व असंख्यात प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य चक्षुदर्शनका विषय नहीं होता, किंतु अनंत प्रदेशवाला पुद्गल द्रव्य ही उसका विषय होता है; इस बातको जतलाने के लिए अनंत प्रदेशवाले द्रव्योंमें यह कहा है। यह वचन देशामर्शक है, इसलिए उससे अचक्षु संज्ञावाले सब दर्शनोंकी यह प्ररूपणा करनी चाहिए। गुरु व लघु यह अनंत प्रदेशावाले स्कंधका विशेषण है,

क्योंकि चक्षु इंद्रियके द्वारा लोहदंडादिरूप गुरु और अर्कतूल (आकके पे़ड़ का रूंआ) आदिरूप लघु पदार्थोंका ग्रहण पाया जाता है।

अगुरुलहुअविसेसणं किण्ण कीरदे? ण चक्खिंदियविसए परमाणुआदीणमसंभवादो। पुव्वं सव्वं पि दंसणमज्झत्थविसयमिदि परूविदं, संपहि चक्खुदंसणस्स बज्झत्थविसयत्थं परूविदं ति णेदं घडदे, पुव्वावरविरोहादो? ण एस दोसो, एवंविहेसु बज्झत्थेसु पडिबद्धत्थसगसत्तिसंवेयणं (का प्रतौ 'सत्ततंवेयणं' इति पाठः।) चक्खुदंसणं ति जाणावणट्ठं बज्झत्थविसयपरूवणाकरणादो। पंचण्णं दंसणणाणमचक्खुदंसणमिदि एकणिद्देसो किमट्ठं कदो? तेसिं पच्चासत्ती अत्थि त्ति जाणावणट्ठं कदो (का प्रतौ 'कुदो' इति पाठः।)। कधं तेसिं पच्चासत्ती? विसईदो (का प्रतौ 'पच्चासत्तिविसइदो' इति पाठः।) पुधभूदस्स अक्कमेण सग-परपच्चक्खस्स चक्खुदंसण(म प्रति पाठोऽयम्। का-ता प्रत्योः 'अचक्खुदंसण' इति पाठः।)विसयस्सेव तेसिं विसयस्स परेसिं जाणावणोवायाभावं (का प्रतौ 'वायाभावा' इति पाठः।) पडिसमाणत्तादो।

शंका -- अगुरुअलघु यह विशेषण क्यों नहीं करते ?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, परमाणु आदि चक्षु इंद्रियके विषय नहीं होते।

शंका -- सभी दर्शन अध्यात्म अर्थको विषय करनेवाला है, ऐसी प्ररूपणा पहले की जा चुकी है। किंतु इस समय बाह्यार्थको चक्षुदर्शनका विषय कहा गया है, इस प्रकार यह कथन संगत नहीं है, क्योंकि इसमें पूर्वापरविरोध है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है। क्योंकि इस प्रकारके बाह्य पदार्थोंमें प्रतिबद्ध आत्मशक्तिका संवेदन करनेको चक्षुदर्शन कहा जाता है; यह बतलानेके लिए उपर्युक्त बाह्यार्थ विषयताकी प्ररूपणा की गयी है।

शंका -- पाँच दर्शनोंके लिए अचक्षुदर्शन ऐसा एक निर्देश किसलिए किया है?

समाधान -- उनकी परस्परमें प्रत्यासत्ति है, इस बातके जतलानेके लिए वैसा निर्देश किया गया है।

शंका -- उनकी परस्परमें प्रत्यासत्ति कैसे है?

समाधान -- विषयीसे पृथग्भूत स्व और परको प्रत्यक्ष होनेवाले ऐसे चक्षुदर्शनके विषयके समान उन पाँचों दर्शनोंके विषयका दूसरोंके लिए ज्ञान करानेका कोई उपाय नहीं है। इसकी समानता पाँचों दर्शनोंमें है, यही उनमें प्रत्यासत्ति है।

विशेषार्थ -- यहाँ शंकाकार का कहना है कि जिस प्रकार चक्षु दर्शनकी स्वतंत्र सत्ता स्वीकार की गयी है, इसी प्रकार से त्वगिंद्रियादिसे उत्पन्न होनेवाले शेष पाँच दर्शनोंकी स्वतंत्र सत्ता स्वीकार न कर उन्हें एक अचक्षुदर्शनके अंतर्गत क्यों कहा गया है? इसके उत्तर में यहाँ यह कहा गया है कि जिस प्रकार चक्षुदर्शनकी विषयभूत वस्तु विषयी (अप्राप्यकारी चक्षु) से पृथक् होनेके कारण एक साथ स्व और पर दोनोंके लिए प्रत्यक्ष होती है और इसीलिए दूसरोंको उसका ज्ञान भी कराया जाता है, इस प्रकार उक्त पाँचों दर्शनोंकी विषयभूत वस्तु विषयी (प्राप्यकारी त्वगिंद्रियादि)से पृथक् न रहने के कारण एक साथ स्व और पर दोनोंके लिए प्रत्यक्ष नहीं हो सकती, और इसीलिए उसका दूसरोंको एक साथ ज्ञान भी नहीं कराया जा सकता है। यही इन पाँचों दर्शनों में प्रत्यासत्ति है जो सबमें समान है।

ओहिदंसणावरणीयं रूविदव्वेसु णिबद्धं।।१३।।

अवधिदर्शनावरणीय रूपी द्रव्योंमें निबद्ध है।।१४।।

रूविदव्वविसयसगसत्तिसंवेयणविघातकरणादो एत्थ वि पुव्वं व बज्झत्थविसयपरूवणाए कारणं वत्तव्वं।

रूपी द्रव्यविषयक आत्मशक्तिके संवेदनका विघात करनेके कारण पहलेके ही समान इसकी भी बाह्यार्थविषयक प्ररूपणाका कारण कहना चाहिए।

केवलदंसणावरणीयं सव्वदव्वे णिबद्धं ।।१४।।

केवलदर्शनावरणीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है।।१४।।

अणंतसम्मत्त-णाण-चरण-सुहादिस(ता प्रतौ 'णाणावरणसुहादि' इति पाठः।)त्तीणं केवलदंसणविसयाणं बज्झत्थं चेव अस्सिदूण अवट्ठाणुवलंभादो। केवलदंसणादीणं बज्झत्थणिबंधो (उभयोरेव प्रत्योः 'णिबद्धो' इति पाठः) किमट्ठं वुच्चदे? दंसणविसयजाणावणट्ठं, अण्णहा दंसणविसयस्स अज्झत्थस्स परेसिमपच्चक्खस्स जाणावणोवायाभावादो।

कारण कि केवलदर्शनकी विषयभूत अनंत सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र एवं सुख आदिरूप शक्तियोंका अवस्थान बाह्य अर्थका ही आश्रय करके पाया जाता है।

शंका -- केवलदर्शनादिकोंकी बाह्यार्थनिबद्धताका कथन किसलिए किया जाता है?

समाधान -- दर्शन का विषय बतलानेके लिए उसका कथन किया जाता है। कारण कि दर्शनका विषयभूत अर्थ अध्यात्मरूप होनेसे दूसरोंको प्रत्यक्ष नहीं है, अतएव इसके बिना उसका ज्ञान करानेके लिए कोई दूसरा उपाय ही नहीं था।

सादासादाणमप्पाणम्हि णिबंधो ।।१५।।

सातावेदनीय और असातावेदनीय आत्मामें निबद्ध हैं।।१५।।

कुदो? सादासादविवागफलाणं (का प्रतौ 'विवाकगलाणं', ता प्रतौ 'विवाकगलाणं (सादासादविवागाणं)', मप्रतौ 'विवाकफलाणं' इति पाठः।)सुह-दुक्खाणं जीवे समुवलंभादो।

कारण कि साता व असाता संबंधी विपाकके फलरूप सुख व दुःख जीव में ही पाये जाते हैं।

मोहणीयं दुविहं -- दंसणमोहणीयं चारित्तमोहणीयं चेदि। तत्थ दंसणमोहणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं, णोसव्वपज्जाएसु ।।१६।।

मोहनीय कर्म दर्शन मोहनीय व चारित्र मोहनीयके भेद से दो प्रकारका है। उनमें दर्शन मोहनीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है, सब पर्यायोंमें नहीं।।१६।।

मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं च सव्वदव्वेसु णिबद्धं, सव्वदव्वसद्दहणगुणविघादकरणादो। सम्मत्तं णोसव्वपज्जाएसु णिबद्धं। कुदो? तत्तो सम्मत्तस्स एगदेसघादुवलंभादो। दंसणमोहणीयं जेण घादिकम्मं तेण अप्पाणम्मि णिबद्धमिदि किण्ण परूविदं। ण एस दोसो, छदव्व-णवपयत्थविसयसद्दहणं सम्मद्दसणं ति घाइज्जमाणजीवंस(का प्रतौ 'जीवस्स' इति पाठः।)पदुप्पायणट्ठं

बज्झत्थणिबंधणपरूवणाकरणादो।

मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय सब द्रव्योंमें निबद्ध है, क्योंकि, वे समस्त द्रव्यों संबंधी श्रद्धान गुणका विघात करनेवाली प्रकृतियाँ हैं। सम्यक्त्व दर्शनमोहनीय प्रकृति कुछ पर्यायोंमें निबद्ध है, क्योंकि उसके द्वारा सम्यक्त्वके एकदेशका घात पाया जाता है।

शंका -- दर्शनमोहनीय चूँकि घातिया कर्म है, अत एव वह आत्मामें निबद्ध है ऐसी प्ररूपणा यहाँ क्यों नहीं की गयी है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि छह द्रव्य और नौ पदार्थविषयक श्रद्धानका नाम सम्यग्दर्शन है, अत एव घात करनेवाले जीवगुणोंकी प्ररूपणा करनेके लिए बाह्यार्थनिबंधनकी प्ररूपणा की गयी है।

चारित्तमोहणीयमप्पाणम्मि णिबद्धं ।।१७।।

चारित्रमोहनीय कर्म आत्मामें निबद्ध है।।१७।।

राग-दोसा बज्झत्थालंबणा, तेसिं च णिरोहो चारित्तं। तदो चारित्तमोहणीयं सव्वदव्वेसु णिबद्धं ति वत्तव्वं (का प्रतौ 'निबद्ध त्ति त्ति घेत्तव्वं' इति पाठः।)। सच्चमेदं, किंतु तमेत्थ णावेक्खिदं। कुदो? बहुसो पदुप्पायणेण उवएसेण एत्थ तदवगमादो।

शंका -- राग और द्वेष बाह्य अर्थका आलंबन करनेवाले हैं, और चूँकि उन्हींके निरोध करनेका नाम चारित्र है अत एव चारित्रमोहनीय कर्म सब द्रव्योंमें निबद्ध है; ऐसा कहना चाहिए?

समाधान -- यह सत्य है, किंतु उसकी यहाँ अपेक्षा नहीं की गयी है। कारण कि बहुत बार प्ररूपणा की जानेसे उपदेशके बिना भी यहाँ उसका ज्ञान हो जाता है।

णिरयाउअं णिरयभवम्मि णिबद्धं ।।१८।।

नारकायु नरकभवमें निबद्ध है।।१८।।

कुदो? तत्थ णिरयभवधारणसत्तिदंसणादो।

कारण कि उसमें नारक भव धारण करानेकी शक्ति देखी जाती है।

सेसाउआणि वि अप्पप्पणो भवेसु (ता प्रतौ 'भवे वा' इति पाठः।) णिबद्धाणि ।।१९।।

शेष तीन आयु कर्म भी अपने अपने भवोंमें निबद्ध हैं।।१९।।

तत्तो तेसिं भवाणमवट्ठाणुवलंभादो।

क्योंकि उनसे उन भवोंका अवस्थान पाया जाता है।

णामं तिधा णिबद्धं -- जीवणिबद्धं पोग्गलणिबद्धं खेत्तणिबद्धं च।।२०।।

नाम कर्म तीन प्रकारसे निबद्ध है -- जीव द्रव्यमें निबद्ध है, पुद्गलमें निबद्ध है और क्षेत्रमें निबद्ध है।।२०।।

एवं णामणिबंधणं तिविहं चेव होदि, अण्णस्स अणुवलंभादो। पोग्गलविवागणिबद्धपयडिपरूवणट्ठं गाहासुत्तं भणदि --

इस प्रकार नामका निबंधन तीन प्रकारका ही है, क्योंकि इनके अतिरिक्त अन्य कोई निबंधन पाया नहीं जाता। पुद्गलविपाकनिबद्ध प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करनेके लिए गाथासूत्र कहते हैं --

पंच य छ त्ति य छप्पंच दोण्णि पंच य हवंति अट्ठेव ।

सरीरादीपस्संता पयडीओ आणुपुव्वीए ।।१।।

अगुरुलहु-परूवघादा आदाउज्जोव णिमिणणामं च ।

पत्तेय-थिर-सुहेदरणामाणि य पोग्गलविवागा (*)।।२।।

(* देहादी पासंता पण्णासा णिमिण-तावजुगलं च।

थिर-सुह-पत्तेयदुगं अगुरुतियं पोग्गलविवाई।। -- गो. क. ४७)

शरीरसे लेकर स्पर्श पर्यंत अर्थात् शरीर संस्थान, अंगोपांग, संहनन, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श ये अनुक्रम से पांच, छह, तीन, छह, पांच, दो, पांच और आठ प्रकृतियाँ अगुरुलघु, परघात, उपघात, आतप, उद्योत, निर्माण, प्रत्येक व साधारण, स्थिर व अस्थिर तथा शुभ व अशुभ; ये नामप्रकृतियाँ पुद्‌गलविपाकी हैं।।१-२।।

पंच सरीराणि, छ संठाणाणि, तिण्ण अंगोवंगाणि, छ संघडणाणि, पंच वण्णा, दो गंधा, पंच रसा, अट्ठ फासा, अगुरुलहुअ-उवघाद-परघात-आदाउज्जोव-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणणामाणि च पोग्गलणिबद्धाणि। कुदो? एदेसिं विवागेण सरीरादीणं णिप्पत्तिदंसणादो। एवं बावण्णणामपयडीओ पोग्गलणिबद्धाओ। संपहि जीवणिबद्धणाम(का प्रतौ 'णिबद्धाणाम' इति पाठः।)पयडिपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि -

----

पाँच शरीर, छह संस्थान, तीन अंगोपांग, छह संहनन, पाँच वर्ण, दो गंध, पाँच रस, आठ स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और निर्माण ये नामकर्म की प्रकृतियाँ पुद्‌गलनिबद्ध है, क्योंकि इनके विपाक से शरीरादिकोंकी उत्पत्ति देखी जाती है। इस प्रकार ये बावन नामप्रकृतियाँ पुद्‌गलनिबद्ध हैं। अब जीवनिबद्ध नामप्रकृतियोंकी प्ररूपणा करनेके लिए उत्तर सूत्र कहते हैं

गदिजादी उस्सासो दोण्णि विहाया तसादितियजुयलं ।

सुभगादीचदुयुगलं जीवविवागा य तित्थयरं * ।।३।।

(* तित्थयरं उस्सासं बादर-पज्जत्त-सुस्सरादेज्जं।

जस-तस-विहाय-सुभगदु-चउगइ-पणजाइ सगवीसं।

गदि जादी उस्सासं विहायगदि तससतियाणं जुयलं च।

सुभगादिचउज्जुगलं तित्थयरं चेदि सगवीसं।। -- गो. क. ५०-५१)

गति, जाति, उच्छ्वास,दो विहायोगतियाँ, त्रस आदिक तीन युगल, सुभग आदिक चार युगल और तीर्थंकर, ये प्रकृतियाँ जीवविपाकी हैं।।३।।

चत्तारिगदि-पंचजादि-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगदि-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जस-अजसकित्ति-तित्थयरपयडीओ अप्पाणम्मि णिबद्धाओ। कुदो? एदासिं विवागस्स जीवे चेवुवलंभादो। एवमेदाओ सत्तावीसणामपयडीओ जीवविवागियाओ। संपहि खेत्तणिबद्धपयडिपरूवणट्ठं गाहासुत्तं भणदि इ

चार गति, पाँच जाति, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुःस्वर, आदेय, अनादेय, यशःकीर्ति, अयशःकीर्ति और तीर्थंकर, ये प्रकृतियाँ आत्मामें निबद्ध हैं, क्योंकि, इनका विपाक जीव में ही पाया जाता है। इस प्रकार ये सत्ताईस नामप्रकृतियाँ जीवविपाकी हैं। अब क्षेत्रनिबद्ध प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करनेके लिए गाथासूत्र कहते हैं

चत्तारि आणुपुव्वी खेत्तविवागा त्ति जिणवरुद्दिट्ठा ।

णीचुच्चागोदाणं होदि णिबंधो दु अप्पाणे ।।४।।

चार आनुपूर्वी प्रकृतियाँ क्षेत्रविपाकी हैं, ऐसा जिनेंद्रदेवके द्वारा निर्दिष्ट किया गया है। नीच व ऊँच गोत्रोंका निबंध आत्मा में है।।४।।

चत्तारि आणुपुव्वीओ खेत्तणिबद्धाओ। कुदो? पडिणियदखेत्तम्हि चेव तासिं फलोवलंभादो। णीचुच्चागोदाणं पुण णिबंधो अप्पाणम्मि चेव, तेसिं फलस्स जीवे चेवुवलंभादो।

चार आनुपूर्वी प्रकृतियाँ क्षेत्रनिबद्ध हैं, क्योंकि, प्रतिनियत क्षेत्रमें ही उनका फल पाया जाता है। परंतु नीच व ऊँच गोत्रका निबंध आत्मामें ही है, क्योंकि उनका फल जीवमें ही पाया जाता है।

दाणंतराइ दाणे लाभे भोगे तहेव उवभोगे ।

गहणे होंति णिबद्धा विरियं जह केवलावरणं ।।५।।

दानांतराय दानके ग्रहणमें, लाभांतराय लाभके ग्रहणमें, भोगांतराय भागके ग्रहणमें तथा उपभोगांतराय उपभोगके ग्रहणमें निबद्ध है। वीर्यांतराय केवलज्ञानावरणके समान अनंत द्रव्योंमें निबद्ध है।।५।।

एदाओ पंच वि पयडीओ जीवणिबद्धाओ चेव, घाइकम्मत्तादो। किंतु घाइज्जमाणजीवगुणजाणावणट्ठमेसा गाहा परूविदा। दाणंतराइयं दाणविग्घयरं, लाहविग्घयरं, लाहंतराइयं, भोगविग्घयरं भोगंतराइयं, उपभोगविग्घयरं उवभोगंतराइयं। गहणसद्दो उवभोगग्गहणे भोगग्गहणे त्ति पादेक्कं संबंधेयव्वो। जहा केवलणाणावरणीयं परूविदं अणंतदव्वेसु णिबद्धमिदि तहा विरियंतराइयं पि परूवेयव्वं, जीवादो पुधभूददव्वं अस्सिऊण विरियस्स पवुत्तिदंसणादो। एवमेत्थ अणुयोगद्दारे एत्तियं चेव परूविदं, सेसअणंतत्थविसयउवदेसाभावादो।

ये पाँचों ही प्रकृतियाँ जीवनिबद्ध ही हैं, क्योंकि वे घातिया कर्म हैं। किंतु उनके द्वारा घाते जानेवाले जीवगुणोंका ज्ञापन करनेके लिए इस गाथाकी प्ररूपणा की गयी है। दानमें विघ्न करनेवाला दानांतराय, लाभमें विघ्न करनेवाला लाभांतराय, भोगमें विघ्न करनेवाला भोगांतराय और उपभोगमें विघ्न करनेवाला उपभोगांतराय है। ग्रहण शब्द का अर्थ उपभोगग्रहण है, इस कारण इसका प्रत्येकके साथ संबंध करना चाहिए। जिस प्रकार केवलज्ञानावरणीयकी अनंत द्रव्योंमें निबद्धता की प्ररूपणा की गयी है, उसी प्रकार वीर्यांतरायकी भी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि जीवसे भिन्न द्रव्य का आश्रय करके वीर्यकी प्रवृत्ति देखी जाती है। इस प्रकार इस अनुयोगद्वारमें इतनी ही प्ररूपणा की गयी है, क्योंकि शेष अनंत पदार्थविषयक निबंधनके उपदेश का अभाव है।

एवं णिबंधणे त्ति समत्तमणुओगद्दारं।

इस प्रकार निबंधन अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।